12 OCT 6 2026.qxd 11-10-2026 19:39 Page 1

ट्रम्प-पुतिन रिश्तोंमें मोड़

राजनीति और कूटनीतिमें कोई नेता या राष्ट्र स्थायी शत्रु या मित्र नहीं होता है। वक्त की जरूरतों और बदलते हालातमें रिश्तोंके स्वरूप भी बदल जाते है, जिसमें सिद्धान्तोंका कोई अर्थ नहीं रहता है, बल्कि अपने-अपने हित सर्वोपरि होते हैं। अमेरिका और रूसके रिश्ते विश्वविदित हैं। दोनों देश एक दूसरेके धुर विरोधी हैं लेकिन अब अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प और रूसके राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिनके आपसी रिश्तोंमें एक नया मोड़ आ गया है, जो चौकाने वाला है। रूसपर भारी टैरिफ शुल्क थोपने वाला अमेरिका अब अपने देशमें ईधनकी बढ़ती कीमतोंसे परेशान होनेके बाद रूससे तत्काल तीन लाख टनसे अधिक डीजल आयात करनेकी घोषणा कर दी है। ट्रम्पकी सबसे बड़ी चिन्ता तीन नवम्बरको होने वाले मध्यविधि चुनावको लेकर है क्योंकि ईंधन की बढ़ती कीमतें ट्रम्प प्रशासनके लिए बड़ी चुनौती बन गयी हैं। इसलिए कीमतें कम करनेके लिए ट्रम्प तेल और डीजलकी आपूर्ति बढ़ानेके लिए कदम उठा रहे हैं। ट्रम्पने पुतिनसे फोन वार्ता करनेके बाद ही नये निर्णयोंकी घोषणा की है। २०२२ में रूस-यूक्रेन युद्ध शुरू होनेके बाद ही अमेरिका ने रूसी तेलपर प्रतिबंध लगा दिया था। अब यह रोक सात अप्रैल २०२७ तक के लिए हटा दी गयी है। ट्रम्पके इस फैसले से यूक्रेनके राष्ट्रपति जेलेंस्की नाराज हो गये हैं और उनका कहना है कि इससे रूस को जो धन मिलेगा उसका इस्तेमाल वह यूक्रेनके खिलाफ करेगा। अमेरिकाके इस दोहरे रवैयेपर सवाल भी उठाये जा रहे हैं। खास बात यह है कि इसी सितम्बर महीनेमें ट्रम्प ने ऐसे कानूनपर हस्ताक्षर किया था, जिसके तहत रूससे तेल खरीदने वाले भारत और चीन जैसे देशोंपर सौ प्रतिशत तक टैरिफ लगाया जा सकता है। अमेरिका और रूसके बीच हुए डीलसे वैश्विक राजनीतिमें भी नया मोड़ आ गया है। ट्रम्पका दोहरा चरित्र उजागर हुआ है। रूस अभी तीन लाख टन डीजल अमेरिका भेजेगा। इसके बाद नवम्बरमें पांच लाख टन और फिर १० लाख टन डीजलकी आपूर्ति की जायगी। ट्रम्पका यह भी कहना है कि यदि सबकुछ ठीक रहा तो आगे चलकर ३० लाख टन डीजल भी आयात किया जा सकता है। इस डीलके लिए ट्रम्पने पुतिनके प्रति आभार भी व्यक्त कर दिया है। अब बड़ा प्रश्न यह है कि रूस से तेल खरीदने वाले भारत सहित अन्य देशोंके साथ टैरिफको लेकर ट्रम्पका रवैया कैसा रहेगा ? ट्रम्पको अब अपनी नीति बदलनी होगी। सौ प्रतिशत तक टैरिफ लगानेकी उनकी नीतिका नैतिक पक्ष ही समाप्त हो गया है। इसलिए ट्रम्पको सौ प्रतिशत टैरिफ वाला कानून वापस ले लेना चाहिए।

मणिपुरमें फिर हिंसा

पूर्वोत्तर भारतके प्रमुख राज्य मणिपुरमें लम्बे समयसे जारी हिंसक घटनाएं राज्य सरकार और प्रशासनिक विफलताका सबसे बड़ा प्रमाण है। इतने लम्बे समय से जारी हिंसा अब बेकाबू हो गया है, जो गम्भीर चिन्ताका विषय है। कुछ दिन शांतिके बाद रह-रहकर हिंसा भड़कना राज्यमें शांतिके लिए शुभ संकेत नहीं है। राज्यमें एक बार फिर हिंसा भड़कने लगी है। हालात कितनी बदतर हो चुकी है, इसका अनुमान शुक्रवारको हुई वारदातोंसे लगाया जा सकता है। कुकी और नगा समुदायोंके बीच हिंसाकी घटनाओंमें २४ घण्टोंमें तीन जिलोंके नौ लोग मारे गये और १४ घरोंको आगके हवाले कर दिया गया। अधिकारियोंके अनुसार नगा बहुल कामजोंग जिलेके कुकी बहुल चसाइ गांवमें एक २२ वर्षीय युवक और ४२ वर्षीय महिलाकी गोली मारकर हत्या कर दी गयी। इसके बाद कुकी और नगा हथियारबंद गुटोंके बीच शुरू हुई गोलीबारी शनिवार सुबह तक जारी रही। इस दौरान दस घरों एवं २० दुकानोंमें आगजनी की गयी। एक अन्य घटनामें कामजोंग में म्यांमार सीमाके पास नगा बस्तीमें संदिग्ध उग्रवादी घुस आये और अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी जिसमें दो लोगोंकी मौत हो गयी। जिला प्रशासनने हिंसाग्रस्त क्षेत्रोंमें निषेद्याज्ञा लागू कर दी है और गांवमें सुरक्षाबल तैनात किये गये हैं। आरक्षणके मुद्देको लेकर कुकी और मैतेई समुदायोंमें इतने लम्बे समयसे हिंसक झड़पोंका जारी रहना हैरान करने वाला है। इसके अन्य कारणोंको भी तलाशनेकी जरूरत है। एक बड़ी समस्या म्यांमार से लगातार हो रहे अवैध प्रवासन की है जिसने तनावको हवा दी है। कारण चाहे जो भी हो इसका निराकरण होना चाहिए। इस समस्याका स्थायी समाधान निकालनेकी जरूरत है तभी राज्यमें शांति सम्भव है। इसके लिए केन्द्र सरकारको सख्त कदम उठानेकी जरूरत है।

लोक संवाद

मानसिक स्वास्थ्य

महोदय,-दस अक्तूबरको विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस मनाया गया। इस दिन बहुतसे देशोंमें सरकारी और विभिन्न सामजिक संघटन लोगोंको मानसिक तनावसे बचनेके बारेमें जागरूक करनेके लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किया गया। हर व्यक्तिका शारीरिक ही नहीं, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य होना भी जरुरी है, तभी हम जिन्दगीके मजे ले सकते हैं। हमारे देशमें आज शारीरिक अस्वस्थ लोगोंका आंकड़ा ही नहीं बढ़ रहा है, बल्कि मानसिक रोगी भी बढ़ रहे हैं। मानसिक रोगी होनेके मुख्य कारण कई गिनवाये जा सकते हैं। संभावना है कि बहुत ही कम गरीब ऐसे होंगे जो मानसिक स्वास्थ्य संकटके दायरेमें आये होंगे। मानसिक स्वास्थ्य खराब होनेके आंकड़े बढ़नेके कारण ही तो देशमें आत्महत्याके केस बढ़ते जा रहे हैं। **-राजेश चौहान, सुल्तानपुर।**

विकसित भारतकी राहमें चुनौतियां

वैश्विक भू-आर्थिक और भू-राजनीतिक उथल-पुथलके बीच भी भारतके लिए कई बातें गर्व करने लायक हैं। करीब एक लाख करोड़ डालरकी अर्थव्यवस्था वाले ताइवानको छोड़ दिया जाये, जिसकी वर्ष २०२६ में आर्थिक वृद्धि दो अंकमें रहनेकी उम्मीद है, तब भारत विश्वकी प्रमुख अर्थव्यवस्थाओंमें तेज गतिसे वृद्धि करनेवाला नजर आता है।

❐ डी. शैलेश

एशियाई विकास बैंक और आर्थिक सहयोग एवं विकास संघटन (ओईसीडी) जैसे वैश्विक संस्थान और एसऐंडपी ग्लोबल रेटिंग्स तथा फिच रेटिंग्स जैसी क्रेडिट रेटिंग एजेंसियोंने हालमें भारतके लिए वित्त वर्ष २०२६-२७ की वृद्धि दरके अनुमान बढ़ाये हैं। इनके पीछे मजबूत घरेलू मांग, बेहतर निर्यात प्रदर्शन और निवेशमें तेजी जैसे कारण बताये गये हैं। लेकिन इन अच्छी खबरोंके बीच अधिकारियों, कारोबार जगतसे जुड़े वैश्विक दिग्गजों और शोध संस्थानोंकी हालकी बातोंको ध्यानसे सुनें तो भारतकी तेज आर्थिक वृद्धिकी तस्वीर उतनी आसान नहीं दिखती। इसके साथ कई शर्तें, चेतावनियां और व्यावहारिक चुनौतियां जुड़ी हुई हैं। सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के मौजूदा शानदार आंकड़ों, भारतकी सम्भावनाओं और उपलब्धियोंकी सामान्य तारीफको एक तरफ रख दें तब इन बातोंका सार यही निकलता है कि भारतको उन पुरानी और जानी-पहचानी आर्थिक कमियोंसे सावधान रहना होगा, जो उसकी तेज आर्थिक वृद्धिकी यात्रामें बार-बार बाधा बनती रही हैं। हालमें मुंबईमें हुए १३वें एसबीआई बैंकिंग ऐंड इकनॉमिक कॉन्क्लेवमें प्रधान मंत्रीके प्रधान सचिव और देशके ताकतवर अफसरशाहोंमेंसे एक, पी. के. मिश्रने भारतकी वैश्विक विनिर्माण प्रतिस्पर्धा बढ़ाने, आयातपर निर्भरता कम करने और युवाओंको बेहतर कौशल देनेकी जरूरतपर जोर दिया। विदेशी निवेशको आकर्षित करनेके मामलेमें उन्होंने बेहद स्पष्ट बात कही। उन्होंने कहा, 'इसके लिए कर नीतियोंमें स्थिरता जरूरी है। राज्यों द्वारा किये जाने वाले अनुबंधोंमें भरोसा होना चाहिए, लॉजिस्टिक्स व्यवस्था विश्वसनीय होनी चाहिए और सरकारी मंजूरियां वास्तवमें समयपर मिलनी चाहिए।' उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार इन चुनौतियोंसे पूरी तरह अवगत है और उनपर काम कर रही है। उनकी इन टिप्पणियोंसे यह भी संकेत मिलता है कि विकसित देशोंकी श्रेणीमें पहुंचनेके लिए भारतको अभी लम्बा रास्ता तय करना है। इसी सम्मेलनमें भारतके मुख्य आर्थिक सलाहकार (सीईए) वी. अनंत नागेश्वरनने भी मिश्रकी तरह ही कई महत्वपूर्ण चुनौतियोंकी ओर ध्यान दिलाया। उन्होंने भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) की रियायती विदेशी मुद्रा स्वैप सुविधाका जिक्र किया जिसके जरिये करीब १४४ अरब डालर जुटाये गये हैं। उन्होंने इसे आरबीआई और सरकारकी दूरदर्शिताका उदाहरण बताया और कहा कि इससे निकट भविष्यमें भारतको काफी राहत मिलेगी। हालांकि उन्होंने यह भी साफ कर दिया कि यह कोई स्थायी समाधान नहीं है।

सीईएके मुताबिक भारतको वैश्विक पूंजी आकर्षित करनेके लिए आक्रामक प्रतिस्पर्धा करनी होगी और इसके लिए केवल केन्द्र सरकारकी नीतियां पर्याप्त नहीं होंगी, बल्कि राज्योंकी नीतियां भी उतनी ही महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने इस बातपर जोर दिया कि निश्चित कर व्यवस्था और उसमें सरलता, निवेशकोंकी सुरक्षा, अनुबंधोंकी विश्वसनीयता और निरन्तरता तथा कुशल श्रमबल जैसे मुद्दोंपर गम्भीरतासे काम करना होगा। युवा आबादीको जनसांख्यिकीय लाभके रूपमें देखनेके मामलेमें नागेश्वरनने इसके बेहतर तरीकेसे प्रबंधन करनेकी बात कही। उनके अनुसार इस लाभको केवल आबादीके आधारपर हासिल नहीं किया जा सकता। इसे सही तरीकेसे सम्भालना और हासिल करना होगा और इसके लिए सार्वजनिक और निजी क्षेत्र, दोनोंको अपने काम करनेके पुराने तरीकोंमें बदलाव और नये प्रयोगके लिए तैयार रहना होगा। यह देशके सरकारी तंत्रकी ओरसे वास्तविकताका अहसास कराने वाली बात है कि वृद्धिके आंकड़ोंसे उत्साहित होकर जश्न मनानेके बजाय भारतको अपनी बुनियादी आर्थिक कमजोरियोंपर ध्यान देना होगा। संघर्षोंसे भरी मौजूदा भू-राजनीतिक परिस्थितियोंके बीच देश ऐसे भुगतान-संतुलनके दबावसे जूझ रहा है जो फिलहाल जल्दी खत्म होता नहीं दिखता।

दुनियाके सबसे बड़े बैंकोंमेंसे एक जेपी मॉर्गन चेजके चेयरमैन और मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) जेमी डिमनने भी भारतके कारोबारी माहौलको लेकर कुछ स्पष्ट बातें कही हैं। उन्होंने कहा, 'भारतमें विदेशी कम्पनियोंके लिए प्रतिस्पर्धा करना अक्सर मुश्किल होता है, क्योंकि उन्हें इसका मौका ही नहीं मिलता। कई बार स्थानीय कम्पनियां प्रतिस्पर्धाको रोकनेके लिए नियमोंका सहारा लेती हैं। सरकारको ऐसा नहीं होने देना चाहिए। यह सभी भारतीयोंके लिए नुकसानदेह है।' हालांकि भारतकी हालकी ७.८ फीसदी सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) वृद्धि (अप्रैल-जून २०२६) की तारीफ करते हुए उन्होंने कहा कि ज्यादातर निवेशकोंका भारतको लेकर दीर्घकालिक नजरिया सकारात्मक है। निवेशकोंको असंगत तरीकेसे लागू होने वाले करों और नियमोंको लेकर चिन्ता रहती हैं और साथ ही उन्होंने देशमें निवेशके माहौलको मजबूत और बेहतर करनेकी बात भी कही। वैश्विक स्तरकी कम्पनियोंकी नब्जकी अच्छी समझ रखने वाले महत्वपूर्ण शख्सकी ओरसे आयी यह टिप्पणी काफी स्पष्ट और कड़ी है।

वैश्विक ब्रोकरेज फर्म बर्नस्टीनकी हालकी एक चेतावनीसे भरी रिपोर्टके मुताबिक, वर्ष २०२६ में अब तक विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकोंने करीब २.४ लाख करोड़ रुपयेकी शुद्ध निकासी की है। रिपोर्टका मानना है कि इन निवेशकोंकी बड़े पैमानेपर स्थायी वापसी आसान नहीं होगी। बर्नस्टीनने इसके लिए भारतके कारपोरेट जगतकी संरचनाको भी एक कारण बताया है। भारतकी कई बड़ी कम्पनियां पुराने आर्थिक ढांचेका प्रतिनिधित्व करती हैं जबकि छोटी कम्पनियोंमें संस्थागत निवेशके लिहाजसे पर्याप्त आकर्षण नहीं है। कई बड़ी कम्पनियां भविष्यमें निवेश करनेके बजाय अपने मौजूदा कारोबारको मजबूत करनेमें अधिक ऊर्जा लगा रही हैं। बर्नस्टीनके नोटके मुताबिक सबसे खराब बात यह है कि कुछ बड़ी कम्पनियां वैश्विक प्रतिस्पर्धासे बचावके लिए सरकारी नीतियोंपर निर्भर रहती हैं। भारतकी एक बड़ी ताकत उसकी विशाल तकनीकी प्रतिभा है और आर्टिफिशिल इंटेलिजेंस (एआई) के क्षेत्रमें भी भारतके पास दुनियाके प्रमुख देशोंमें शामिल होनेकी क्षमता है। भारतके पास प्रतिभा, युवा आबादी, डेटा और नवाचार जैसे लगभग सभी जरूरी संसाधन मौजूद हैं कि यह देश दुनियाके विशिष्ट एआई क्लबमें शामिल हो सके। लेकिन इसमें भी एक चुनौती यह है कि भारत अपने प्रतिभाशाली इंजीनियरों और संस्थापकोंको देशमें रोक पाता है या नहीं। उन्होंने भारतीय इंजीनियरों और स्टार्टअप संस्थापकोंके लगातार विदेश जानेकी ओर ध्यान दिलाया। अब कई भारतीय सॉफ्टवेयर संस्थापक शुरुआतसे ही सिलिकन वैलीमें अपना आधार बना रहे हैं और वहींसे अपनी टीम तैयार कर रहे हैं। वैश्विक तकनीकी कम्पनियोंके बीच प्रतिभाशाली लोगोंको आकर्षित करनेकी होड़ भी इस चुनौतीको और बढ़ा रही है और उनकी कम्पनी भी इसमें शामिल है। देशके हितकी चिन्ता करने वाले ऐसे लोगोंकी बातें निश्चित रूपसे गम्भीरतासे लेने लायक हैं। उम्मीद है कि इन मुद्दोंपर जिम्मेदार आर्थिक और राजनीतिक पक्ष जल्द ही ठोस कदम उठायंगे।



भारतकी कई बड़ी कंपनियां पुराने आर्थिक ढांचेका प्रतिनिधित्व करती हैं जबकि छोटी कंपनियोंमें संस्थागत निवेशके लिहाजसे पर्याप्त आकर्षण नहीं है। कई बड़ी कंपनियां भविष्यमें निवेश करनेके बजाय अपने मौजूदा कारोबारको मजबूत करनेमें अधिक ऊर्जा लगा रही हैं। कई भारतीय साफ्टवेयर संस्थापक शुरुआतसे ही सिलिकन वैलीमें अपना आधार बना रहे हैं और वहींसे अपनी टीम तैयार कर रहे हैं। वैश्विक तकनीकी कंपनियोंके बीच प्रतिभाशाली लोगोंको आकर्षित करनेकी होड़ भी इस चुनौतीको और बढ़ा रही है और उनकी कंपनी भी इसमें शामिल है। ऐसी बातें निश्चित रूपसे गंभीरतासे लेने लायक हैं।

मंत्रोंसे अधिक भावनाका महत्व

भारतवर्ष पर्वों और उत्सवोंकी पावन भूमि है। यहां मनाये जाने वाले सभी त्योहारोंका अपना विशेष आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व है। इन सभी पर्वोंमें शारदीय नवरात्रका स्थान अत्यंत विशिष्ट और पवित्र माना गया है।

❐ महेन्द्र तिवारी

नवरात्रि नौ रातों और दस दिनोंका एक ऐसा पावन समय है जब सम्पूर्ण ब्रह्मांडमें आदि शक्ति मां भगवतीकी विशेष कृपा बरसती है। नवरात्र केवल एक साधारण व्रत या उत्सव मात्र नहीं है, बल्कि यह मानव मन और आत्माकी शुद्धि तथा दैवीय शक्तिके संचयका एक अत्यंत दुर्लभ अवसर है। यह समय हमें हमारी आन्तरिक ऊर्जाको जागृत करने और जीवनमें व्याप्त अज्ञानताके अंधकारको मिटाकर ज्ञानके प्रकाशकी ओर ले जानेका मार्ग प्रशस्त करता है।शारदीय नवरात्रका आगमन वर्षा ऋतुके समापन और शीत ऋतुके आरम्भके समय होता है। प्रकृति भी इस समय एक नये रूपमें सजती है और सम्पूर्ण वातावरणमें एक नयी ताजगी तथा पवित्रताका वास होता है। इन नौ रातोंमें मां दुर्गाके नौ अलग-अलग स्वरूपोंकी उपासना की जाती है। प्रत्येक स्वरूपका अपना एक विशेष सन्देश और महत्व है। माताके यह रूप हमें जीवनके विभिन्न चरणों और संघर्षोंमें साहस, धैर्य, करुणा और विजयकी प्रेरणा देते हैं। शक्तिकी उपासनाका यह पर्व हमें यह सिखाता है कि सत्य और धर्मकी रक्षाके लिए शक्तिका होना अत्यंत आवश्यक है। बिना शक्तिके शांति और प्रगतिकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है। यह शक्ति केवल शारीरिक नहीं है, बल्कि मानसिक और आत्मिक भी है।

अखबार हिन्दी मिलापमें प्रकाशित आरामसे नामक स्तंभमें दी गयी पूजन विधिके अनुसार, नवरात्रकी उपासना अत्यंत सरल, क्रमबद्ध और भावपूर्ण है। किसी भी शुभ और मांगलिक कार्यका आरंभ सदैव विघ्नहर्ता भगवान श्री गणेशके पूजनसे ही होता है। नवरात्रकी उपासनामें भी सबसे पहले भगवान गजाननका स्मरण और पूजन करना अनिवार्य माना गया है। साधक अपने हाथमें पवित्र जल, अक्षत अर्थात् बिना टूटे हुए चावल, और पुष्प लेकर संकल्प करता है। संकल्प एक प्रकारकी दृढ़ प्रतिज्ञा है। साधक मातासे प्रार्थना करता है कि हे जगदम्बे, मैं इस पवित्र पूजन और व्रतके माध्यमसे अपने संकल्पको पूर्ण करनेके लिए आपका हृदयसे आह्वान करता हूं। संकल्पके पश्चात जल, अक्षत और कुमकुमसे विधि-विधानके साथ पूजनकी शुरुआत होती है।पूजनके मुख्य क्रममें सबसे पहला चरण माताका आह्वान और ध्यान है। साधक अपनी आंखें बंद करके मां भगवतीके उस दिव्य और भव्य स्वरूपका ध्यान करता है, जब भगवान विष्णु योगनिद्रामें लीन थे और माताने प्रकट होकर सृष्टिकी रक्षाके लिए मधु और कैटभ नामक भयंकर राक्षसोंका वध किया था। ध्यानका यह चरण मनको सांसारिक चिन्ताओंसे मुक्त करके पूरी तरहसे माताके चरणोंमें केन्द्रित करनेका एक माध्यम है। जब मन पूरी तरहसे एकाग्र हो जाता है, तब माताकी उपस्थितिका अनुभव हृदयमें होने लगता है।

ध्यानके उपरान्त माताको स्नान करानेकी प्रक्रिया होती है। सर्वप्रथम शुद्ध और पवित्र जलसे माताकी प्रतिमा या यंत्रको स्नान कराया जाता है। इसके पश्चात पंचामृतसे स्नान कराया जाता है। पंचामृत पांच अत्यंत पवित्र वस्तुओंका मिश्रण होता है, जिसमें गायका दूध, दही, घी, शहद और शर्करा मिलायी जाती है। स्नान कराते समय साधक यह भाव रखता है कि हे महादेवी, दूध, दही, घी, शहद और शर्कराके मिश्रणसे तैयार यह उत्तम पंचामृत आपकी सेवामें प्रस्तुत है, कृपया इसे स्वीकार करें। पंचामृत स्नानके पश्चात एक बार फिरसे शुद्ध जलसे स्नान कराया जाता है, ताकि माताका श्री विग्रह पूरी तरहसे स्वच्छ हो जाय।स्नानके बाद माताके श्रृंगारका चरण आता है। मां भगवतीको अत्यंत सुन्दर और पवित्र वस्त्र अर्पित किये जाते हैं। मुख्य वस्त्रके साथ साथ उपवस्त्र भी चढ़ाया जाता है। इसके बाद मस्तकपर चन्दन और सिन्दूरका तिलक लगाया जाता है जो सौभाग्य और सुहागका प्रतीक है। माताको ताजे और सुगंधित पुष्पोंकी माला पहनायी जाती है। वस्त्र अर्पित करते समय साधक कहता है कि हे देवी, नाना प्रकारके सुन्दर बेल बूटों और जरी गोटोंसे सुसज्जित यह अत्यंत उत्तम और मनमोहक वस्त्र मैं आपको समर्पित कर रहा हूं। श्रृंगारका यह भाव हमें यह सिखाता है कि हम अपने जीवनमें भी सुंदरता, पवित्रता और सदगुणोंको धारण करें।श्रृंगारके पश्चात माताको भोग अर्पित किया जाता है और दीप दर्शन कराया जाता है। माताके समक्ष अत्यंत श्रद्धाके साथ विविध प्रकारके उत्तम नैवेद्य, ऋतु फल और स्वादिष्ट मिष्ठान्न रखे जाते हैं। इसके बाद सुगंधित धूप और दीप जलाकर माताको दिखाया जाता है। दीपका प्रकाश ज्ञानका प्रतीक है और धूपकी सुगंध हमारी प्रार्थनाओंकी पवित्रताको दर्शाती है। यह प्रकाश अज्ञानता और बुराईके अंधकारको समाप्त करनेका संदेश देता है। पूजनके अंतिम चरणमें माताकी आरती, प्रदक्षिणा और क्षमा प्रार्थनाकी जाती है। आरतीके लिए विशेष रूपसे कर्पूरका उपयोग किया जाता है। कर्पूरके साथ भीगे हुए ईंधनको जलाकर उसमें १, ३, ५, ७ या इससे अधिक संख्यामें बत्तियां बनाकर माताकी मंगल आरती उतारी जाती है। कर्पूर जलकर पूरी तरहसे समाप्त हो जाता है और कोई अवशेष नहीं छोड़ता, जो यह दर्शाता है कि हमारा अहंकार भी माता के समक्ष पूरी तरहसे भस्म हो जाना चाहिए। आरतीके बाद साधक अपने स्थानपर गोल घूमकर प्रदक्षिणा करता है। अंतमें सबसे महत्वपूर्ण भाग होता है क्षमा प्रार्थना। साधक हाथ जोड़कर कहता है कि हे माता, न तो मुझे आपकी भक्तिका कोई गहरा ज्ञान है और न ही मैं पूजाके कठिन मंत्रोंको जानता हूं। मैंने अपनी अल्प बुद्धि और क्षमताके अनुसार जो भी पूजन किया है, आप अपनी उदारतासे उसे परिपूर्ण मानकर स्वीकार करें और मेरी सभी भूलोंको क्षमा करें।नवरात्र पूजनका सबसे मूल और महत्वपूर्ण भाव यही है कि यदि पूजाके दौरान कोई मंत्र भूल भी जाय या कोई सामग्री छूट भी जाय तो साधककी भावना और श्रद्धामें कोई कमी नहीं आनी चाहिए। अज्ञानवश या अधिकतामें किये गये पूजनसे जगदम्बा सर्वकल्याणी महादेवी संतुष्ट ही होती हैं, क्योंकि वे केवल अपने भक्तोंका सच्चा भाव देखती हैं। कर्मकांडसे अधिक महत्व हृदयकी पवित्रताका है।यह पावन पर्व हमें एक बहुत ही गहरा सामाजिक और आध्यात्मिक संदेश भी देता है। यह हमें सिखाता है कि संसारकी हर एक स्त्रीमें देवीका ही वास है। स्त्रीका सम्मान करना, उसकी गरिमाकी रक्षा करना और उसे समाजमें उचित स्थान देना ही देवीकी सच्ची आराधना है। जबतक समाजमें नारीका सम्मान नहीं होगा, तबतक कोई भी पूजा या व्रत सफल नहीं हो सकता। शक्तिकी इस आराधनासे ही हमारे व्यक्तिगत और सामाजिक जीवनमें फैला हुआ अज्ञानता और बुराइयोंका अंधकार दूर होता है।

यही कारण है कि दीपावलीके महापर्वसे ठीक पहले आने वाली यह शारदीय नवरात्र, केवल एक उत्सव नहीं है, बल्कि यह दीपावलीके प्रकाश पर्वकी तैयारीका एक अत्यंत महत्वपूर्ण आध्यात्मिक आरम्भ है। नवरात्रमें हम अपने भीतर शक्ति और पवित्रताका संचय करते हैं, ताकि दीपावलीके दिन हम अपने अंतर्मनके दीयोंको सत्य और ज्ञानके प्रकाशसे पूरी तरहसे प्रज्वलित कर सकें। यह संपूर्ण कालखंड हमें अंधकारसे प्रकाशकी ओर, असत्यसे सत्यकी ओर और मृत्युसे अमरताकी ओर ले जानेका एक दिव्य मार्ग प्रशस्त करता है। माताकी यह आराधना हमारे जीवनको सुख, शांति, समृद्धि और अपार सफलतासे भर दे, यही इस पर्वकी सच्ची सार्थकता है।



शक्तिकी आवश्यकता

❐ रघोत्तम शुक्ल

संसारके हर प्राणीको किसी भी कार्यकी सफलताके लिए शक्तिकी आवश्यकता होती है। सभी प्राणियोंमें शक्ति रूपेण संस्थिता ही भगवती हैं, जो निराकार होते हुए भी सभी देवताओंके तेजसे प्रादुर्भूत होकर साकार होती हैं। पृथ्वीपर आकर भगवानके अवतार और स्वरूप भी उनकी आराधना उपासनासे ही शक्तिमान होकर बड़े अभीष्ट प्राप्त करनेमें सफल हो पाते हैं। श्रीराम भगवान विष्णुके सप्तमावतार थे। उनसे बड़ा शस्त्रधारी कोई नहीं था है। गीताके दशम् अध्यायमें अपनी विभूतियोंका वर्णन करते हुए भगवान श्रीकृष्णने अपनेको शस्त्रधारियोंमें राम कहा है, पवन: पवतामस्मि राम:शस्त्रभृतामहम्। ऐसा होते हुए भी रावण वध करनेसे पूर्व उन्होंने शक्तिकी उपासना की। देवी भागवतमें आये प्रसंगानुसार जब श्रीराम प्रवर्षण गिरिपर शोकाकुल बैठे थे और लक्ष्मण जीसे अपना दु:ख व्यक्त कर रहे थे, तभी आकाश मार्गसे देवर्षि नारद आये और उनसे शारदीय नवरात्र व्रत रखनेकी सलाह दी, क्योंकि तत्समय आश्विन(क्वॉर) मास उपस्थित था। वे बोले-उपाय कथयाम्यद्य तस्य नाशाय राघव। व्रतं कुरुष्व श्रद्धावानाश्विने मासि साम्प्रतम्॥ नवरात्रोपवासं च भगवत्या प्रपूजनम्। सर्वसिद्धिकरं राम जप होम विधानत:॥ श्रीरामको देवर्षिने देवी प्रतिष्ठापन और उपवास, पूजन आदिका सम्पूर्ण विधान बताया और स्वयं आचार्यत्व करनेकी सहमति प्रदान की। उन्होंने कहा कि हे राम सबसे पहले यह व्रत भगवान विष्णुने किया था। तदनंतर शिवजी और ब्रह्माने, फिर इंद्र और तत्पश्चात् ऋषि मुनियोंने। नारद जीके निर्देशानुसार श्रीरामने देवी जीकी स्थापना कर, पूजन, व्रत और उपवास किये। अष्टमीकी रात्रि देवी मांने उन्हें दर्शन देकर विजयी होनेका आशीर्वाद दिया। हिन्दी कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने 'रामकी शक्तिपूजा' शीर्षक एक लम्बी कविता लिखी है, जिसमें उन्होंने दिखाया है कि युद्धस्थलमें रामने नौ दिन देवी आराधना की और प्रतिदिन एक नीलकमल मांके चरणोंमें अर्पित करते थे। परीक्षा लेनेके लिए माताने अष्टमीको छिपकर एक कमल चुरा लिया। विवश रामने सोचा कि बचपनमें माता कौशल्या हमें 'राजीवलोचन' कहती थीं तो क्यों न हम कमलके अभावमें अपना एक नेत्र देवी मांको अर्पित कर दें और वे वाण लेकर अपना नेत्र निकालनेपर उद्यत हो गये। तभी माताने प्रकट होकर उनका हाथ पकड़ लिया और विजयका आशीर्वाद देती हुई उनके शरीरमें प्रविष्ट हो गयीं। पूर्णावतार भगवान श्रीकृष्ण भी देवीके आराधक थे। दुर्गा सप्तशतीके अर्गला स्तोत्रमें आया है, कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वद्भक्त्या सदाम्बिके। रूपं देहि जयम् देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ शम्बरासुर द्वारा रुक्मिणीके सूतिका गृहसे उनके नवजात शिशु-पुत्र प्रद्युम्नका हरण होनेपर भी उन्होंने महाशक्ति स्वरूपा देवी मांकी ही स्तुति की थी। सद्य:शारदीय नवरात्रि उपस्थित हैं। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नम:।

सचसे दूर होता आम नागरिक

❐ अमन सिंह गौर

किसी लोकतंत्रके लिए इससे बड़ी विडंबना क्या होगी कि वहां सच बोलनेसे पहले यह सोचना पड़े कि उससे किसका फायदा होगा और किसका नुकसान। आज हमारे देशमें राजनीतिक पक्षधरताका असर कुछ ऐसा ही दिखाई देने लगा है। सत्ता और विपक्षके बीच मतभेद होना स्वाभाविक है लेकिन जब उनके समर्थक हर बातको अपनी राजनीतिक पसंदके चश्मेसे देखने लगें और मीडियाका एक बड़ा हिस्सा भी इसी खेमेबंदीमें शामिल दिखाई दे, तब चिन्ता होना लाजिमी है। सवाल केवल नेताओंकी राजनीतिका नहीं है, सवाल उस सोचका भी है, जिसमें सचसे ज्यादा अहमियत इस बातको मिलने लगी है कि सच किसके पक्षमें जा रहा है।आज मीडियाका एक हिस्सा ऐसा दिखाई देता है, जिसका ज्यादातर जोर सत्ताकी उपलब्धियां गिनाने, उसके फैसलोंका बचाव करने और विपक्षको कठघरेमें खड़ा करनेपर रहता है। सरकार कुछ करे तो उसके पक्षमें तर्कोंकी भरमार हो जाती है लेकिन उसी सरकारके किसी फैसलेपर सवाल उठे तो सवाल पूछने वालेकी मंशापर ही सवाल खड़े होने लगते हैं। बेरोजगारी, महंगी, शिक्षा, स्वास्थ्य या किसी सरकारी व्यवस्थाकी कमियोंपर सवाल पूछनेके बजाय बहसको दूसरे मुद्दोंकी तरफ मोड़ दिया जाता है। सरकारकी उपलब्धियोंको सामने लाना गलत नहीं है लेकिन उसकी कमियोंको दबाकर केवल उपलब्धियां दिखाना पत्रकारिता नहीं हो सकती। दूसरी ओर, मीडियाका एक हिस्सा ऐसा भी है जिसकी आलोचनाका निशाना मुख्य रूपसे सत्ता रहती है और विपक्षके प्रति उसका रवैया जरूरतसे ज्यादा उदार दिखाई देता है। उसे सरकारकी हर चूकपर सवाल उठाना जरूरी लगता है, लेकिन विपक्षके नेताओंके आचरण, उनके वादों और उनके फैसलोंकी पड़ताल करते समय वही सख्ती नजर नहीं आती। विपक्ष कोई आरोप लगा दे तो उसे बड़ी खबर बना दिया जाता है लेकिन उस आरोपकी सचाई जांचनेकी जिम्मेदारी पीछे छूट जाती है। विपक्षका सत्तासे सवाल पूछना लोकतंत्रके लिए जरूरी है, परन्तु इसका मतलब यह नहीं कि विपक्षको सवालोंसे छूट मिल जाय। यही वह जगह है, जहां निष्पक्षताका दावा करने वालोंकी असल परीक्षा होती है। किसी पत्रकार या मीडिया संस्थानका किसी विचारधारासे सहमत होना अपने आपमें गलत नहीं है। विचार रखना और किसी नीतिका समर्थन करना हर व्यक्तिका अधिकार है। लेकिन जब विचारधारा तथ्योंसे ऊपर हो जाय, जब अपने पक्षकी गलतीको छिपाने और दूसरे पक्षकी सही बातको भी गलत साबित करनेकी कोशिश होने लगे, तब निष्पक्षताका दावा खोखला हो जाता है। सत्ताकी हर बातको सही ठहराने वाला माध्यम और विपक्षकी हर बातको सही साबित करने वाला माध्यम, दोनों अपने-अपने तरीकेसे जनताको अधूरी तस्वीर दिखाते हैं। फर्क केवल इतना है कि एक सत्ताके पक्षमें खड़ा होता है और दूसरा विपक्षके। लेकिन इस पूरी स्थितिमें सबसे बड़ा सवाल मीडियाके उन दर्शकों और पाठकोंसे भी है, जो अपने पसंदीदा माध्यमकी हर बातको सच मान लेते हैं। सत्ता समर्थक मीडिया सरकारकी कमियां छिपाये तो उन्हें कोई परेशानी नहीं होती, जबकि विपक्ष समर्थक मीडिया अपने पसंदीदा नेताओंकी गलतियोंप